॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : ११ फरवरी २००५

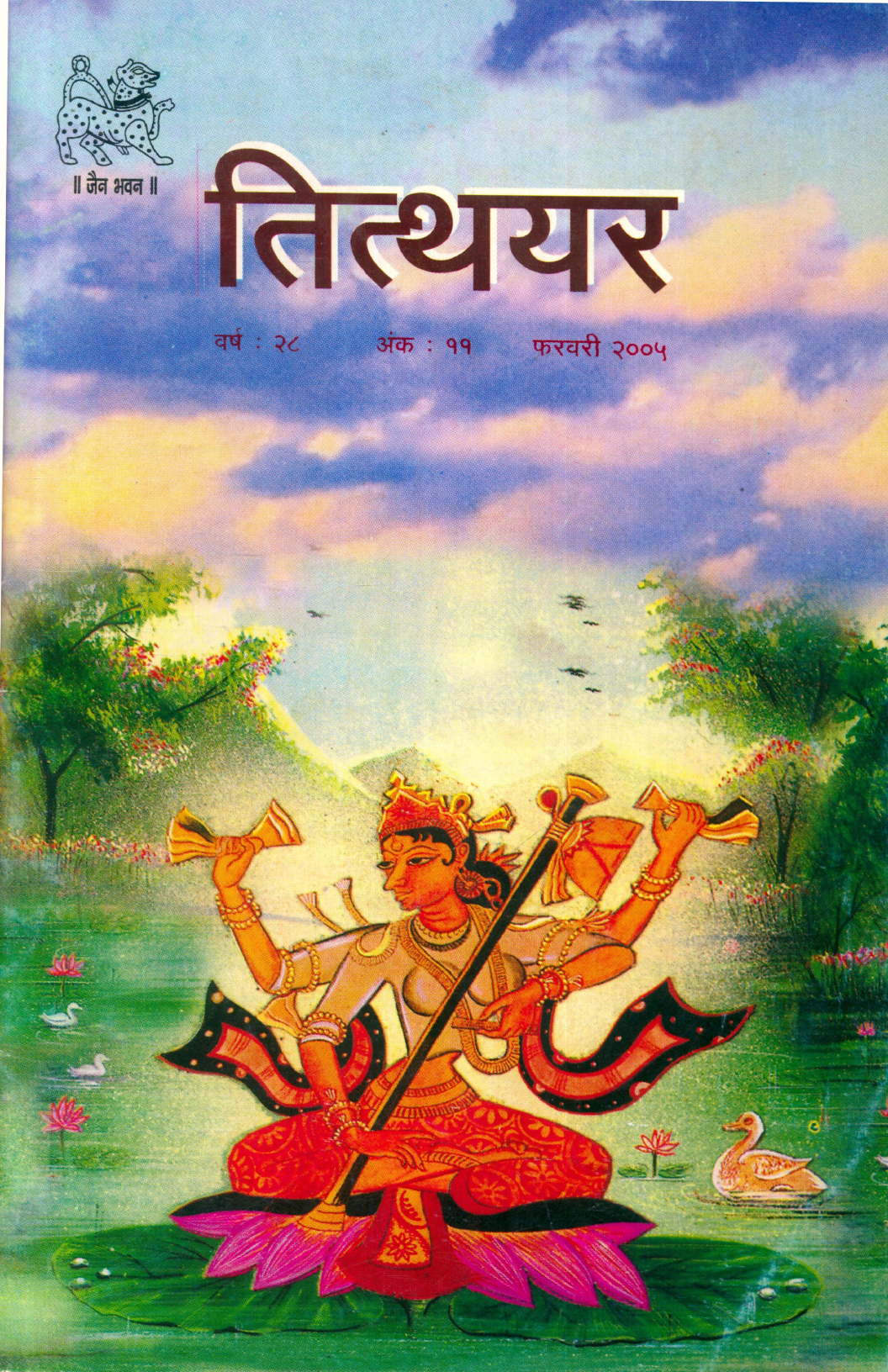

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - ११, फरवरी, २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	व्याप्त व्यक्तित्व : अखंड कृतित्व: ऋषभदेव एवं अष्टापद	डॉ. लता बोथरा	५२५

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

व्याप्त व्यक्तित्व : अखंड कृतित्व

ऋषभदेव एवं अष्टापद

तीर्थों की श्रेणी में सबसे प्राचीन शाश्वत तीर्थ अष्टापद है जो प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव की निर्वाण भूमि है। ऋषभदेव को आदिनाथ भी कहा जाता है।

'आदिमं पृथिवीनाथ आदिमं निष्परिग्रहम्
आदिमं तीर्थनाथ च ऋषभस्वामिन स्तुमः'

जो इस अवसर्पिणी काल में पहले ही राजा, पहले ही त्यागी मुनि, पहले ही तीर्थंकर हुये उन ऋषभदेव स्वामी की हम स्तुति करते हैं।

(We pay homage to Rsabhdev who was the first king, first ascetic, first Tirthankara in this Avasarpini Era. Rsabhdev, as the founder of Civilization preached a religion, started the culture & showed the path of liberation). ऋषभदेव की मान्यता सिर्फ जैन ग्रन्थों में ही नहीं, जैनेतर ग्रन्थों में भी व्यापकरूप से मिलती है। इस सन्दर्भ में श्री वी. जी नायर ने लिखा है "Adi Bhagavan was the organiser of human society and the originator of human culture and civilization. He lived in the days of hoary antiquity. Adi Bhagavan was the first monarch, ruler, ascetic, saint, sage, omniscient

teacher, law maker and architect of humanism, and humanitarianism."

"नित्यानुभूत निज लाभ निवृत्त तृष्णः
श्रेय स्यतद्र चनया चिर सुप्त बुद्धेः
लोकस्य यः करुण या मय मात्म लोक
माख्यान्न भो भगवते ऋषभाय तस्मै।"

भागवत पुराण

निरन्तर विषय भोगों की अभिलाषा करने के कारण अपने वास्तविक श्रेय से चिरकाल तक बेसुध हुए लोगों को जिन्होंने करुणावश निर्भय आत्म लोक का संदेश दिया और जो स्वयं निरन्तर अनुभव होने वाले आत्मस्वरूप की प्राप्ति के कारण सब प्रकार की तृष्णाओं से मुक्त थे उन भगवान् ऋषभ देव को नमस्कार हो।

भगवतपुराण का यह श्लोक ऋषभ संस्कृति को दर्शाता है साथ ही उनके अति प्राचीन होने का भी संदेश देता है। ऋषभदेव को सिर्फ जैन परम्परा ही नहीं वरन् वैदिक परम्परा भी उनको शलाका पुरुष मानती है। वेदों और पुराणों में उनके उल्लेख इसकी निश्चित तौर पर पुष्टि करते हैं और अनेकों साहित्यिक प्रमाण इस विषय में आज भी उपलब्ध हैं। **ऋग्वेद** व **अथर्ववेद** में ऐसे अनेक मन्त्र हैं, जिनमें ऋषभदेव की स्तुति अहिंसक, आत्म-साधकों में प्रथम, अवधूत चर्या के प्रणेता तथा मर्त्यो में सर्वप्रथम अमरत्व अथवा महादेवत्व पाने वाले महापुरुष के रूप में की गई है। एक स्थान पर उन्हें ज्ञान का

आगार तथा दुःखों व शत्रुओं का विध्वंसक बताते हुए कहा गया है :

"असूतपूर्वा वृषभो ज्यायनिभा अस्य शुरुघः सन्तिपूर्वीः।
दिवो न पाता विदथस्यधीभिः क्षत्रं राजाना प्रदिवोदधाथे।।"

–ऋग्वेद, ५-३८

जिस प्रकार जल से भरा हुआ मेघ वर्षा का मुख्य स्रोत है और जो पृथ्वी की प्यास को बुझा देता है, उसी प्रकार पूर्वी अर्थात् ज्ञान के प्रतिपादक वृषभ महान् हैं। उनका शासन वरद है। उनके शासन में ऋषि-परम्परा से प्राप्त पूर्व का ज्ञान आत्मा के क्रोधादि शत्रुओं का विध्वंसक हो। दोनों (संसारी और शुद्ध) आत्माएँ अपने ही आत्म-गुणों में चमकती हैं; अतः वे ही राजा हैं, वे पूर्ण ज्ञान के आगार हैं और आत्म-पतन नहीं होने देते।

ऋग्वेद के एक दूसरे मन्त्र में उपदेश और वाणी की पूजनीयता तथा शक्ति सम्पन्नता के साथ उन्हें मनुष्यों और देवों में पूर्वयावा माना गया है :

"मखस्य ते तीवषस्य प्रजूतिमियभिं वाचमृताय भूषन्।
इन्द्र क्षितीमामास मानुषीणां विशां दैवी नामुत पूर्वयावा।।"

–ऋग्वेद, २।३४।२

अर्थात् – हे आत्मदृष्टा प्रभो! परम् सुख पाने के लिये मैं तेरी शरण में आता हूँ, क्योंकि तेरा उपदेश और वाणी पूज्य और शक्तिशाली है। उनको अब मैं धारण करता हूँ। हे प्रभो! सभी मनुष्यों और देवों में तुम्हीं पहले पूर्वयावा (पूर्वगत् ज्ञान के प्रतिपादक) हो।

यजुर्वेद में लिखा है—

वेदाहमेतं पुरुषं महान्तमादित्यवर्ण तमसः पुरस्तात्।
तमेव निदित्वाति मृत्युमेति नान्य पंथा विद्यतेऽयनाय।।

यजुर्वेद अ. ३१, मंत्र ८

मैंने उस महापुरुष को जाना है, जो सूर्य के समान तेजस्वी, अज्ञानादि अन्धकार से दूर है। उसी को जानकर मृत्यु से पार हुआ जा सकता है, मुक्ति के लिए अन्य कोई मार्ग नहीं है।

'ॐ नमोऽर्हन्तो ऋषभो' (यजुर्वेद)

अर्थात्:- अर्हन्त नाम वाले (वा) पूज्य ऋषभदेव को प्रणाम हो।

"ॐ ऋषभंपवित्रं पुरुहूतमध्वरं यज्ञेषु नग्नं परमं माहसंस्तुतं वारं शत्रुंजयंतं पुशुरिंद्रमाहुरिति स्वाहा। उत्रातारमिद्रं ऋषभंवदंति अमृतारमिन्द्रहवे सुगतं सुपार्श्वमिन्द्रंहवे शकमजितं तदूर्द्धमान पुरुहूतमिंद्रमाहुरिति स्वाहा। ॐ स्वस्तिनः इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्तिनः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तार्क्षोअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। दीर्घायुस्त्वायवलायुर्वाशुभजातायु ॐ रक्षरक्षअरिष्टनेमि स्वाहा वामदेव सांत्यर्थ मनुविधीयते सोऽस्माक अरिष्टनेमि स्वाहा।" (यजुर्वेद)

अर्थः- ऋषभदेव पवित्र को और इन्द्ररूपी अध्वर को यज्ञों में नग्न को, पशु वैरी के जीतने वाले इंद्र को आहुति देता हूँ। रक्षा करने वाले परम ऐश्वर्ययुक्त और अमृत और सुगत सुपार्श्व भगवान जिस ऐसे पुरुहुत (इन्द्र) को

ऋषभदेव तथा वर्द्धमान कहते हैं उसे हवि देता हूं। वृद्धश्रवा (बहुत धनवाला) इन्द्र कल्याण करे, और विश्ववेदा सूर्य हमें कल्याण करे, तथा अरिष्टनेमि हमें कल्याण करे और बृहस्पति हमारा कल्याण करे। (यजुर्वेद अध्याय २५ मं. १९) दीर्घायु को और बल को और शुभ मंगल को दे। और हे अरिष्टनेमि महाराज! हमारी रक्षा करे ।। वामदेव शान्ति के लिये जिसे हम विधान करते हैं वह हमारा अरिष्टनेमि है, उसे हवि देते हैं।

अथर्ववेद में ऋषभ को भवसागर से पार उतारने वाला कहकर उसकी स्तुति की गई है–

"अंहो मुचं वृषभं यज्ञियानां विराजन्तं प्रथममध्वरणाम्।
अपां न पातमश्विना हुवेधिय इन्द्रियेण तमिन्द्रियं।"

पापों से मुक्त पूज्य देवताओं और सर्वश्रेष्ठ आत्म साधकों में सर्वप्रथम भवसागर के पोतकों में हृदय से पुकारता हूं। हे सहचर बन्धुओं! उस सर्वश्रेष्ठ वृषभ को तुम पूर्ण श्रद्धा द्वारा उसके आत्मबल और उसके तेज को धारण करो क्योंकि वह भवसमुद्र से पार उतारेगा।

(दत्तभोज/अथर्ववेद १९.४२.४)

ऋग्वेद में भगवान् ऋषभदेव को अनन्तचतुष्ट्य का धारी प्रतिपादित किया है–

चत्वारी श्रंगात्रयो अस्य पादा, दै शीर्ष सप्त हस्तासौ अस्य त्रिधा बद्धो वृषभो शेरणीति, महादेवी मत्यनिविवेद।

(ऋग्वेद ४.५८.३)

अर्थः- ऋषभदेव के अनन्त दर्शन, अनन्त ज्ञान, अनन्त ज्ञान, अनन्त सुख और अनन्त वीर्य रूप चार श्रंग है। उनके सम्यक् दर्शन सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चरित्र रूपी पद (चरण) हैं। उच्चासन अर्थात् केवल ज्ञान एवं मुक्ति रूपी दो शीर्ष हैं। सप्तभंगी रूप सात हाथ है। मन वचन कार्यरूपी तीन योगों से बंधकर जीव संसारी हो जाता है और इन तीनों का निरोधकर तपस्या कर यह आत्मा परमात्मा बन जाता है।

आगे पुनः स्तुति करते हुए कहते हैं—

'एवं वभ्रो वृषभ चेकिस्तान यथा हेक न हषीषेन हन्ति।'

हे शुद्ध, दीप्तिमान सर्वज्ञ वृषभ! हमारे ऊपर ऐसी कृपा करो कि हम जल्दी नष्ट न हों और न किसी को नष्ट करो।

कल्याण के संत अंक में लिखा है—'परम भगवत भक्त राजर्षि भरत भगवान् ऋषभदेव के सौ पुत्रों में सबसे बड़े थे। उन्होंने पिता की आज्ञा से राज्यभार स्वीकार किया था। उन्हीं के नाम पर इस देश का नाम **भारत वर्ष** या **भरत खण्ड** कहलाया।'

(कल्याण का संत अंक, प्रथम खण्ड वर्ष १२, पृ. २७६)

स्वामी अखंडानन्द सरस्वती ने (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित) अपने ग्रन्थ की टीका में लिखा है— "**ऋषभदेव को पुराणों में भगवान वासुदेव का अंश कहा है, और ऋषभदेव का अवतार माना है इसका क्या प्रयोजन है? यह स्पष्ट करते हुए स्वामी जी ने लिखा है (मोक्षमार्ग विवक्षया अवतीर्णम्) अर्थात् मोक्षमार्ग का उपदेश देने के**

लिये ऋषभदेव ने अवतार लिया था। संसार की लीला दिखाने के लिए नहीं। भगवान ऋषभदेव ने जिस ज्ञानधारा का उपदेश दिया, उसे उपनिषद में परा-विद्या अर्थात् श्रेष्ठ विद्या माना गया है।"

हिन्दुओं के प्रसिद्ध योगशास्त्र ग्रन्थ **हठयोग प्रदीपिका** में मंगलाचरण करते हुए लेखक ने भगवान् आदिनाथ की स्तुति की है—

"श्री आदिनाथाय नमोस्तु तस्मै, येनोपदिष्टा हठयोग विद्या। विभ्राजते प्रोन्नतराज योग, मारोढुमिच्छोरधिरोहिणीव।।"

श्री आदिनाथ को नमस्कार हो। जिन्होंने उस हठयोग विद्या का, सर्वप्रथम उपदेश दिया, जोकि बहुत ऊंचे, राजयोग पर आरोहण करने के लिये, नसैनी के समान है।

(वीरज्ञानोदय ग्रन्थमाला)

तीर्थंकर ऋषभदेव योग प्रवर्तक थे। कैलाश (अष्टापद) पर उन्होंने जो साधना की वे अत्यन्त रोमांचक होने के साथ साथ अनेक पद्धतियों की आविर्भावक भी थी। वे प्रथम योगी बन गये। उनके माता पिता का नाम मेरू और नाभि भी योग से सम्बद्ध है। अर्थात् नाभि और मेरू से उत्पन्न होने वाला ऋषभ। जो नाभि और मेरू से उत्पन्न होगा, वह विशेष ऊर्जा सम्पन्न होगा। यह ऊर्जा चेतना की ही हो सकती है। अतः ऋषभ श्रेष्ठ है। श्रीमद् भागवत में ऋषभ देव की योगचर्या की विस्तृत चर्चा की गयी है। (मुनि महेन्द्र कुमारजी)

वी. जी. नैय्यर ने अपने ग्रन्थ में लिखा है– "द्रविड़ श्रमण धर्म के अनुयायी थे। श्रमणधर्म का उपदेश ऋषभदेव ने दिया था। वैदिक आर्यों ने, उन्हें जैनों का प्रथम तीर्थंकर माना है। मनु ने द्रविड़ों को व्रात्य कहा है, क्योंकि वे जैनधर्मानुयायी थे।" **(दि इन्डस वैली सिविलाइजेशन एण्ड ऋषभ - पृ. २)**

शतपथ ब्राह्मण में लिखा है व्रतधारी होने के कारण (अरिहंत) अर्हन् के उपासकों को व्रात्य कहते थे। वे प्रत्येक विद्याओं के जानकार होने के कारण द्राविड़ नाम से प्रसिद्ध थे। ये बड़े बलिष्ठ, धर्मनिष्ठ, दयालु और अहिंसा धर्म को मानने वाले थे। ये अपने इष्टदेव को वृत्र (सब ओर से घेरकर रहने वाला सर्वज्ञ) अहिन् सर्व आदरणीय परमेष्ठी, परमसिद्धि के मालिक, जिन, संसार के विजेता, शिव आनंदपूर्ण, ईश्वर, महिमापूर्ण आदि नामों से पुकारते थे। ये आत्मशुद्धि के लिये अहिंसा, संयम और तपोनिष्ठ मार्ग के अनुयायी, तथा ये केशी (जटाधारी) शिश्नदेव (नग्न साधुओं) के उपासक थे।

(अनेकान्त वर्ष १२, किरण ११, पृ. ३३५)

पद्मपुराण में लिखा है—इस आर्हत धर्म के प्रवर्तक तीर्थंकर ऋषभदेव कहे जाते हैं :–

"आर्हतं सर्वैमैतच्च मुक्ति द्वारम् संवृतम।
धर्मात् विभुक्ते रहोयं नः तस्मादपरः परः।"

(पर्व १३/३५० पद्मपुराण)

आर्यमंजुश्री मूल काव्य में भारत के प्राचीनतम सम्राटों में नाभिराय के पौत्र सम्राट भरत को बताया गया है। उसमें लिखा है– नाभि के पुत्र भगवान् ऋषभदेव ने हिमालय में तप द्वारा सिद्धि प्राप्त की थी, और वे जैनधर्म के आद्यदेव थे—

"प्रजापते सुतो नाभिः तस्यापि आगमुच्यति।
नाभिनो ऋषभपुत्रो वै सिद्धकर्म दृढ़व्रतः।
तस्यापि मणिचरो यक्षः सिद्धो हेमवते गिरौ।
ऋषभस्य भरतः पुत्रः सो पि मज्जतात् सदा जपेत्।"

इसी ग्रन्थ में एक स्थान में कपिल का भी उल्लेख है। **'कपिल मुनिनाम ऋषि वरो, निर्ग्रन्थ तीर्थंकर ऋषभ निर्ग्रन्थ रूपि।'**

जैन शास्त्रों में ऋषभदेव का वर्णन बहुत कुछ वेदों और पुराणों के अनुसार ही मिलता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि जिन ऋषभदेव की महिमा वेदान्तियों के ग्रन्थों में वर्णन है, जैनी भी उन्हीं ऋषभदेव को पूजते हैं, दूसरे को नहीं।

"युगेयुगे महापुण्यं दृश्यते द्वारिका पुरी।
अवतीर्णो हरिर्यत्र प्रभासशशिभूषणः।।
रेवताद्रौजिनो नेमिर्युगादिर्विमलाचले।
ऋषीणामश्रमादेव मुक्तिमार्गस्य कारणम्।।"

।। श्री महाभारत ।।

अर्थः- युग युग में द्वारिकापुरी महा क्षेत्र है, जिसमें हरि का अवतार हुआ है जो प्रभास क्षेत्र में चन्द्रमा की तरह शोभित है। और गिरनार पर्वत पर नेमिनाथ और कैलाश (अष्टापद) पर्वत पर आदिनाथ अर्थात् ऋषभदेव हुए हैं। यह क्षेत्र ऋषियों के आश्रम होने से मुक्तिमार्ग के कारण हैं।

श्री नेमिनाथ स्वामी भी जैनियों के २२वें तीर्थंकर है और श्रीऋषभनाथ को आदिनाथ भी कहते हैं, क्योंकि वे इस युग के आदि तीर्थंकर है।

"दर्शयन् वर्त्म वीराणां सुरासुरनमस्कृतः।
नीतित्रयस्य कर्ता यो युगादौ प्रथमो जिनः।।
सर्वज्ञः सर्वदर्शी च सर्वदेवनमस्कृतः।
छत्रत्रयीभिरापूज्यो मुक्तिमार्गमसौ वदन्।।
आदित्यप्रमुखाः सर्वे बद्धांजलिभिरीशितुः।
ध्यायंति भावतो नित्यं यदंघ्रियुगनीरजम्।।
कैलासविमले रभ्ये ऋषभोयं जिनेश्वरः।
चकार स्वावतारं यो सर्वः सर्वगतः शिवः।।"

।। श्री नागपुराण ।।

अर्थः- वीर पुरुषों को मार्ग दिखाते हुए सुर असुर जिनको नमस्कार करते हैं जो तीन प्रकार की नीति के बनाने वाले हैं, वह युग के आदि में प्रथम जिन अर्थात् आदिनाथ भगवान् हुए, सर्वज्ञ (सबको जानने वाले), सबको देखने वाले, सर्व देवों के पूजनीय, छत्रत्रय करके पूज्य, मोक्षमार्ग का व्याख्यान कहते हुए, सूर्य को प्रमुख रखकर सब देवता सदा हाथ जोड़कर भाव सहित जिसके

चरणकमल का ध्यान करते हुए ऐसे ऋषभ जिनेश्वर निर्मल कैलाश पर्वत पर अवतार धारण करते भये जो सर्वव्यापी हैं और कल्याणरूप हैं।।

'अष्टषष्टिषु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत्।
आदिनाथस्य देवस्य स्मरणेनापि तद्भवेत्।।'

।। शिवपुराण।।

अर्थः- अड़सठ (६८) तीर्थों की यात्रा करने का जो फल है, उतना फल श्री आदिनाथ के स्मरण करने ही से होता है।

अग्निध्रसूनोर्नाभेस्तु ऋषभोऽभूत् सुत्तो द्विजः।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताद् वरः।।३९।।
सोऽभिषिच्यर्षभः पुत्रं महाप्राव्राज्यमास्थितः।
तपस्तेपे महाभागः पुलहाश्रमसंशयः।।४०।।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्ष भारताय पिता ददौ।
तस्मात्तु भारतं वर्ष तस्य नाम्ना महात्मनः।।४०।।

—मार्कण्डेयपुराण, अध्याय ४० पृ.१५०

हिमाह्वयं तु यद्वर्ष नाभेरासीन्महात्मनः।
तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मेरुदेव्या महाद्युतिः।।३७।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रः शताग्रजः।
सोऽभिषिच्यर्षभःपुत्रं भरतं पृथिवीपतिः।।३८।।

—कुर्मपुराण, अध्याय ४१ पृ. ६१

जरामृत्युभयं नास्ति धर्माधमौ युगादिकम्।
नाधर्म मध्यमं तुल्या हिमादेशात्तु नाभितः।।१०।।
ऋषभो मरुदेव्या च ऋषभाद् भरतोऽभवत्।
ऋषभोदात्तश्रीपुत्रे शाल्यग्रामे हरिं गतः।।११।।

भरताद् भारतं वर्ष भरतात् सुमतिरत्वभूत्।
—अग्निपुराण, अध्याय१० पृ. ३२

नाभिरत्वजनयत्पुत्रं मरुदेव्या महाद्युतिः।
ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्।।५०।।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।
सोऽभिषिच्याथ भरतं पुत्रं प्राव्राज्यमास्थितः।।४१।।
हिमाह्व दक्षिणं वर्ष भरताय न्यवेदयत्।
तस्माद् भारतं वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।।४२।।
—वायुमहापुराण पूर्वार्ध, अध्याय ३३ पृ. ५१

नाभिरत्वजनयत् पुत्रं मरुदेव्या महाद्युतिम्।।५९।।
ऋषभं पार्थिवं श्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूर्वजम्।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।।६०।।
सोऽभिषिच्यर्षभः पुत्रं महाप्राव्राज्यमास्थितः।
हिमाह्वं दक्षिणं वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बुधाः।।६१।।
—ब्रह्माण्डपुराण पूर्वार्ध, अनुषङ्गपाद, अध्याय १४

नाभिर्मरुदेव्यां पुत्रमजनयत् ऋषभनामानं,
तस्य भरतः पुत्रश्च तावदग्रजः तस्य भरतस्य पिता
ऋषभः हेमाद्रेर्दक्षिणं वर्ष महद् भारतं नाम शशास।
—वाराहपुराण, अध्याय ७४ पृ ४९

नाभेर्निसर्ग वक्ष्यामि हिमांकेऽस्मिन्निबोधत।
नाभिरत्वजनयत् पुत्रं मरुदेव्यां महामतिः।।१९।।
ऋषभं पार्थिवश्रेष्ठं सर्वक्षत्रस्य पूजितम्।
ऋषभाद् भरतो जज्ञे वीरः पुत्रशताग्रजः।।२०।।

सोऽभिषिच्याथ ऋषभो भरतं पुत्रवत्सलः।
ज्ञानं वैराग्यमाश्रित्य जितेन्द्रियमहोरगान्।।२१।।
सर्वात्मनात्मन्यास्थाप्य परमात्मानमीश्वरम्।
नग्नो जटो निराहारोऽचीरी ध्वान्तगतो हि सः।।२२।।
निराशस्त्यक्तसंदेहः शैवमाप परं पदम्।
हिमाद्रेर्दक्षिणं वर्ष भरताय न्यवेदयत्।।२३।।
तस्मात्तु भारतं वर्ष तस्य नाम्ना विदुर्बधाः।

—लिंगपुराण, अध्याय ४७ पृ ६८

न ते स्वस्ति युगावस्था क्षेत्रेष्वष्टसु सर्वदा।
हिमाह्वयं तु वै वर्ष नाभेरासीन्महात्मनः।।२७।।
तस्यर्षभोऽभवत्पुत्रो मरुदेव्यां महाद्युतिः।
ऋषभाद्भरतो जज्ञे ज्येष्ठः पुत्रशतस्य सः।।२८।।

—विष्णुपुराण, द्वितीयांश, अध्याय १ पृ. ७७

नाभेः पुत्रश्च ऋषभः ऋषभाद् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्ष भारतं चेति कीर्त्यते।।५७।।

—स्कन्धपुराण, माहेश्वरखण्ड, कौमारखण्ड, अध्याय २७

इन सभी उदाहरणों से ऋषभदेव की ऐतिहासिक प्रामाणिकता में कोई भी संदेह नहीं रह जाता है। ये सभी प्रमाण स्पष्ट करते है कि नाभि और मरुदेवी के पुत्र ऋषभ थे। जो योग में, तप में, क्षत्रियों में, राजाओं में श्रेष्ठ थे तथा हिमालय के दक्षिण क्षेत्र को उन्होंने अपने पुत्र भरत को सौप दिया। और भरत के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम भारत वर्ष पड़ा।

जिस प्रकार जैन परम्परा प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव से ही मानव सभ्यता के विकास का प्रारम्भ मानती है, उसी प्रकार अन्य सभी परम्पराओं में भी यहीं मान्यता कहीं प्रत्यक्ष तो कहीं अप्रत्यक्ष रूप से स्थापित है। अतः यह निर्विवाद है कि मानव सभ्यता और संस्कृति के आदि जनक ऋषभदेव थे। इस विषय में Dr. Stella Gerdner ने लिखा है " The ancient rhythm of history have been vibrant enough to focus enough light on Jainism. As Risabh or Brisabh as he is generally known has been one of the most remarkable historical person of all times. It was he who changed the forms of society as more scientific one than it was in its primitive stage. (Formation of Identity And Other Essays Pg. 313).

ऋग्वेद के गवेषणात्मक अध्ययन के आधार पर प्रसिद्ध विद्वान **श्री सागरमल जी** ने अर्हत् और ऋषभवाची ऋचायें नामक लेख में लिखा है— "ऋग्वेद में ना केवल सामान्य रूप से श्रमण परम्परा और विशेष रूप से जैन परम्परा से सम्बन्धित अर्हत्, अरहन्त, व्रात्य, वातरसनामुनि, श्रमण आदि शब्दों का उल्लेख मिलता है अपितु उसमें अर्हत् परम्परा के उपास्य वृषभ का भी उल्लेख शताधिक बार मिलता है। मुझे ऋग्वेद में वृषभवाची ११२ ऋचाएँ प्राप्त हुई है। सम्भवतः कुछ और ऋचाएँ भी मिल सकती है। यद्यपि यह कहना कठिन है कि इन सभी ऋचाओं में

प्रयुक्त वृषभ शब्द ऋषभ देव का ही वाची है, फिर भी कुछ ऋचाएं तो अवश्य ऋषभदेव से सम्बन्धित ही मानी जा सकती है। डॉ. राधाकृष्णन, प्रो. जिम्मर, प्रो. वार्डियर आदि कुछ जैनेतर विद्वान इस मत के प्रतिपादक है कि ऋग्वेद में जैनों के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव से संबंधित निर्देश उपलब्ध होते हैं। बौद्ध साहित्य के धम्मपद में उन्हें (उसभं पवरं वीरं – ४२२) कहा गया है।'

Prof Nathmal Kedia के अनुसार-- "Change in times and these positive effects have quite a number of times been contrary to the effects of society. Because of the changes in society the basic mores and systematic social strata were dwindling in ancient times. Jainism was one of the more important religion of the world which emancipated the humanistic theory thereby ethically evaluating the social strata. Rishabh Deva and Bharat along with their descendents who reigned in the primaeval Indian Soil, totally changed the face of society in this very ethical manner< were human beings was the supreme and nothing non existed beyond this facade no Godheads or Gods whatsoever. (Religion And Society Edited by Prof Friedrich Stam-- Pg 12)

अग्नि की स्तुति के लिये वैदिक सूत्रों में जिन जिन विशेषणों का प्रयोग किया गया है उनके अध्ययन से स्पष्ट है कि यह अग्निदेव भौतिक अग्नि न होकर इन्हें ऋषभदेव के लिये अभिहित किया गया है। क्योंकि उनका कर्म अग्नि के समान था। जिस प्रकार सूर्य जीव जगत में प्राण का संचार करता है उसी प्रकार उन्होंने जीव जगत में ज्ञान का संचार किया। **'देवा अग्नि धारयन् द्रविणोदाम्'** देवा अर्थात् अपने को देव संज्ञा से अभिवादन करने वाले आर्यगणों ने द्रविणोदाम् अर्थात् धन ऐश्वर्य प्रदान करने वाले अग्नि को धारयन् अपने आराध्यदेव के रूप में धारण कर लिया।

यह सूत्र ऐतिहासिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। इससे पता चलता है कि भगवान् ऋषभदेव वैदिक संस्कृति के पूर्व के आराध्य देव थे। क्योंकि जीव जगत का स्रोत अग्नि है, सूर्य के बगैर यह संसार नहीं चल सकता उसी तरह इस आरे में मनुष्यों के सारे संस्कार ऋषभदेव द्वारा किये गये इसलिये उनकी तुलना सूर्य और अग्नि से की जाती है। अग्नि जीव जगत का प्राण है उसी प्रकार इस जीव जगत में मनुष्य के हर संस्कार का प्राण ऋषभदेव ही है।

'अपश्चमित्र' (जो संसार का मित्र है।) 'धिपणा च साधन' (जो ध्यान द्वारा साध्य है), 'प्रन्नथा' (जो पुरातन है), 'सहसा जायमानः' (जो स्वयं भू है) 'सद्यः काव्यानि षडधन्त विश्वा' (जो निरन्तर विभिन्न काव्य स्तोत्रों को

धारण करता है, अर्थात् जिसकी सभी जन स्तुति करते रहते हैं), 'देवो अग्नि धारयन् द्रविणोदाम्' (देवों ने उस द्रव्यदाता अग्नि को धारण कर लिया।)

'पूर्वया निविदा काव्यतासोः' (जो प्राचीन निविदों द्वारा स्तुति किया जाता है), 'यमा; प्रजा अजन्यन् मनुनाम्' (जिसने मनुओं की सन्तानीय प्रजा की व्यवस्था की) 'विवस्वता चक्षुषा द्याम पञ्च' (जो अपने ज्ञान द्वारा द्यु और पृथ्वी को व्याप्त किए हुए हैं, देवों ने उस द्रव्यदाता को धारण कर लिया।)

'तमीडेत महासंघ' (तुम उसकी स्तुति करो जो सर्वप्रथम मोक्ष का साधक है), 'अर्हतं' (सर्वपूज्य) है, 'आरीविशः उव्जः भृज्जसानम्' (जिसने स्वयं शरण में आने वाली प्रजा को बल से समृद्ध करके), 'पुत्रं भरतं सम्प्रदानुं' (अपनें पुत्र भरत को सौंप दिया), 'देवों ने उस द्रव्यदाता अग्नि' (अग्नि देवता को) 'धारयन्' (धारण कर लिया।)

'स मातरिश्वा' (वह वायु के समान निर्लेप और स्वतन्त्र है), 'पुरूवार पुष्टि' (अभीष्ट वस्तुओं का पुष्टिकारक साधन है), 'उसने स्वर्वितं' (ज्ञान सम्पन्न होकर), 'तनयाय' (पुत्र के लिए) 'गातं' (विद्या), 'विदद' (देदी), 'वह विशांगोपा' (प्रजाओं का संरक्षक है,) 'पवितारोदस्योः' (अभ्युदय तथा निःश्रेयस का उत्पादक है), 'देवों ने उस द्रव्यदाता अग्नि' (अग्रनेता को) ग्रहण कर लिया।

ऋग्वेद के ये सूत्र ऋषभदेव और अग्नि तथा सूर्य की समानता को स्पष्ट करते हैं। स्वर्गीय डॉ. नरेन्द्र विद्यार्थी ने ऋग्वेद के इस प्रथम श्लोक जो अग्नि को सम्बोधित है के साथ भी शब्द और भाव साम्य दोनों बताया है।

"ओऽम् अग्नि मीडे पुरोहित यज्ञस्य देवमृत्विज होतारं रत्नधातमम्
अग्नि : पूर्वभिऋषिभिरीडयो नूतनं स्त सदेवो एह वक्षति"

जिसका अर्थ है– मैं अग्रनेता ब्रह्मा की स्तुति करता हूँ जो अग्र हितैषी हैं जो सभी कार्यों के आदि में पूज्य माने जाते हैं, जो युक्ति साधना के आदर्श है, जो रत्नत्रय धारी है, जो जन्म-मरण रूप संसार को हवि देने वाले है, जो धर्म संस्थापक है वह अग्रनेता पुराने और नये सभी ऋषियों द्वारा स्तुत्य है वह मुझे आत्मशक्ति प्रदान करें। श्री ए.एच. आहुवालिया के अनुसार— 'They worshipped Agni knowing that it was the terrestrial representative of the mighty sun, the source of all power and life giver argumentor of all precious things' --- A.H. Ahuwalia.

इसी प्रकार सामवेद १-१ में लिखा है कि– **(अग्न आ याहि वतिये गृणानो हव्यदातये नि होता सत्सि बर्हिषि)** अर्थात् Agni come! come for the good of us all. Come be anxious to participate in all that we have to offer you. यह सभी श्लोक स्पष्ट करते हैं कि

ऋषि गण भौतिक अग्नि का आह्वान् नहीं कर रहे वरन् जो दिखाई नहीं देती ऐसी सर्वोच्च सिद्ध शक्ति का आह्वान् कर रहे हैं।

'उड़ीसा में जैन धर्म' किताब की भूमिका में नीलकण्ठ साहू ने लिखा है कि "जगन्नाथ जैन शब्द है और ऋषभनाथ के साथ इसकी समानता है। ऋषभनाथ का अर्थ है सूर्यनाथ या जगत का जीवन रूपी पुष्प। ऋषभ यानि सूर्य होता है। यह प्राचीन बेबीलोन का आविष्कार है। प्रो. सई ने अपने Hibbert Lectures (1878) में स्पष्ट कहा है कि इसी सूर्य को वासन्त विषुवत में देखने से लोगों ने समझा कि हल जोतने का समय हो गया है। वे वृषभ अर्थात् बैलों से हल जोतते थे इसलिये कहा गया कि वृषभ का समय हो गया। इस दृष्टि से लोक भाषा में सूर्य का नाम ऋषभ या वृषभ हो गया। उससे पूर्व सूर्य जगत का जीवन है यह धारणा लोगों में बद्धमूल हो गयी थी। अतः ऋषभ की और सूर्य की उपासना का ऐक्य स्थापित हो गया। इस प्रकार नीलकण्ठ साहू ने उड़ीसा से बेबीलोन तक व्याप्त ऋषभ - संस्कृति को व्यक्त किया है।"

आगे वे लिखते है कि "अति प्राचीन वैदिक मंत्र में भी कहा है—सूर्य आत्मा जगत् स्तस्थुषश्च। (ऋग्वेद १-११५-१) सूर्य जगत् का आत्मा या जीवन है। बेबीलोन के निकट जो तत्कालीन प्राचीन मिट्टानी राज्य था वहाँ से यह बात पीछे आयी थी। उस समय मिट्टानी राष्ट्र के राजा (ई० पू० चौदहवीं शताब्दी) दशरथ थे। उनकी बहन और पुत्री दोनों

का विवाह मिस्त्र सम्राट के साथ हुआ था। उन्हीं के प्रभाव से प्रभावित होकर चतुर्थ आमान हेटय् या आकनेटन् ने आटेन (आत्मान्) नाम से इस सूर्य धर्म का प्रचार किया था। और यह **सूर्य या जगत् का आत्मा ही परम पुरुष या पुरूषोत्तम है** ऐसा प्रचार कर एक प्रकार से धर्म में पागल होकर समस्त साम्राज्य को भी शर्त पर लगाने का इतिहास में प्रमाण है। बहुत सम्भव है कि कलिंग में द्रविड़ों के भीतर से ये जगन्नाथ प्रकट हुए हों। मिस्त्रीय पुरूषोत्तम तथा पुरी के पुरूषोत्तम ये दोनों इसी जैन धर्म के परिणाम हैं।"

सराक जाति के प्रसंग में भी ऋषभदेव और अग्नि का सम्बन्ध परिलक्षित होता है। सराक जाति में प्रधानतः दो गोत्र पाए जाते हैं— आदिदेव एवं ऋषभदेव। हाँ कुछ अल्प संख्यक सराकों में अवश्य किसी और गोत्र का परिचय मिलता है पर वे नगण्य ही हैं। प्रधानता आदिदेव एवं ऋषभदेव की ही है। आदिदेव ऋषभदेव का ही एक अन्य नाम है।

"स्मरणातीत काल से ही मनुष्य अपने जाति एवं गोत्र को जानता रहा है। मानवों का एक-एक समूह इतिहास के संधि स्थलों पर जिस युगपुरुष के माध्यम से परिचालित हुआ है, जिनके प्रवर्तित अनुशासन एवं रीत-नीतियों को माना है, जिनके निकट दीक्षित हुए हैं—वहीं उस समूह के गोत्रपिता कहलाए एवं इस गोत्र परिचय के फलस्वरूप हजारों हजार वर्षों बाद भी मनुष्य अपने-अपने गोत्र के लोगों को अच्छी तरह पहचान लेते हैं।"

सराक जाति के गोत्रपिता ऋषभदेव थे, इसीलिए निस्सन्देह रूप से कहा जा सकता है कि इनके पूर्व पुरुष भगवान ऋषभदेव के अत्यन्त ही निकट के व्यक्ति थे, ऐसा भी हो सकता है कि उनके साथ उन लोगों का खून का रिश्ता भी रहा हो। इसीलिए, ऋषभदेव द्वारा प्रचलित अनुशासन उनके लिए सर्वथा पालन करने योग्य था।

सराक शब्द का साधारण अर्थ होता है श्रावक अर्थात् श्रमणकारी। पाश्चात्य पण्डितों ने ही सर्वप्रथम इस अर्थ को प्रचलित किया। यद्यपि पूरे विश्व में एवं हमारे देश में भी प्रागैतिहासिक युग से ही अधिकांश जातियों के नाम उस जाति के जातिगत पेशे और उसके आदिभूमि के आधार पर रखे गए हैं। इस दृष्टि से भी हम देख सकते है कि सराक, सराग, सराकी, सरापी तथा सरोगी आदि शब्द सर + आग या सर + आगी से आए हैं। सर शब्द का अर्थ होता है निःसृत होना एवं आगि अथवा आगी का अर्थ होता है अग्नि। अतएव सराग व सरागी शब्दों का अर्थ हैं **अग्नि से निसृत** अथवा जो अग्नि से कुछ निसृत कराते हैं।

"नव पाषाण युग के अन्तिम समय तक मनुष्य यही जानता था कि अग्नि सब कुछ ध्वंस कर देती है। पर अचानक ही आश्चर्य के साथ उन्होंने देखा कि ऋषभ पुत्रगणों ने अग्नि से ध्वंस हुए मलवों से कुछ महामूल्यवान पदार्थ निसृत किये। इसीलिए, शायद इन्हें सराग कहा गया हो। सरागी अथवा अग्निपुत्र के रूप में यह जाति

श्रेष्ठ सम्मान से विभूषित हुई।" (पूर्वाचल में सराक संस्कृति और जैन धर्म — तित्थयर)

अग्नि प्रयोग के साथ साथ कृषि का ज्ञान भी ऋषभदेव ने दिया था। इस सन्दर्भ में कर्नल टॉड ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ राजस्थान का इतिहास में ऋषभदेव और नूह के साम्य के विषय में उल्लेख करते हुए लिखा है— 'Arius montanus' नामक महाविद्वान ने लिखा है नूह कृषि कर्म से प्रसन्न हुआ और कहते इस विषय में वह सबसे बढ़ गया। इसलिए उसी की भाषा में वह **इश आद मठ** अर्थात् भूमि के काम में लगा रहने वाला पुरुष कहलाया। इश-आद-मठ का अर्थ पृथ्वी का पहला स्वामी होता हैं। आगे टाड साहब कहते है— "उपर्युक्त पदवी, प्रकृति और निवास स्थान जैनियों के प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ के वृत्तांत के साथ ठीक बैट सकते हैं जिन्होंने मनुष्यों को खेती बाड़ी का काम और अनाज गाहने के समय बैलों के मुंह को छीकी लगाना सिखाया।"

यह आश्चर्य का विषय है कि ऋषभदेव के विषय में इतने उल्लेख प्राप्त होने के बाद भी कुछ विद्वान इस सत्यता को स्वीकारने से कतराते है इसका कारण या तो उनकी अज्ञानता है या धार्मिक विद्वेष । प्रो. विरुपाक्ष वार्डियर, एम. ए. वेदतीर्थ आदि विद्वानों ने ऋग्वेद में वर्णित ऋषभदेव को आदि तीर्थंकर ऋषभ ही स्वीकार किया है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा से प्राप्त सीलों से भी

आज से ५००० वर्ष पहले भी ऋषभदेव की मान्यता के पुष्ट प्रमाण मिले हैं।

मोहनजोदड़ो से कुछ नग्न कायोत्सर्ग योगी मुद्राएं मिली हैं, उनका संबंध जैन संस्कृति से हैं। इसे प्रमाणित करते हुए स्व. राय बहादुर प्रो. चन्द्रप्रसाद रमा ने अपने शोधपूर्ण लेख में लिखा है—

"सिंधु मुहरों में से कुछ मुहरों पर उत्कीर्ण देवमूर्तियां न केवल योग मुद्रा में अवस्थित हैं वरन् उस प्राचीन युग में सिंधु घाटी में प्रचलित योग पर प्रकाश डालती हैं। उन मुहरों में खड़े हुए देवता योग की खड़ी मुद्रा भी प्रकट करते हैं और यह भी कि कायोत्सर्ग मुद्रा आश्चर्यजनक रूप से जैनों से संबंधित है। यह मुद्रा बैठकर ध्यान करने की न होकर खड़े होकर ध्यान करने की है। आदि पुराण सर्ग अठारह में ऋषभ अथवा वृषभ की तपस्या के सिलसिले में कायोत्सर्ग मुद्रा का वर्णन किया गया है। मथुरा के कर्जन पुरातत्व संग्रहालय में एक शिला फलक पर जैन ऋषभ की कायोत्सर्ग मुद्रा में खड़ी हुई चार प्रतिमाएं मिलती हैं, जो ईसा की द्वितीय शताब्दी की निश्चित की गई हैं। मथुरा की यह मुद्रा मूर्ति संख्या १२ में प्रतिबिंबित है। प्राचीन राजवंशों के काल की मिश्री स्थापत्य में कुछ ऐसी प्रतिमाएं मिलती हैं जिनकी भुजाएं दोनों ओर लटकी हुई हैं। यद्यपि ये मिश्री मूर्तियां या ग्रीक कुरों प्रायः उसी मुद्रा में मिलती हैं, किन्तु उनमें वैराग्य की वह झलक नहीं है जो सिंधुघाटी की इन खड़ी मूर्तियों

या जैनों की कायोत्सर्ग प्रतिमाओं में मिलती है। ऋषभ का अर्थ होता है वऋषभ और वृषभ जिन ऋषभ का चिन्ह है।" (मार्डन रिव्यु अगस्त १९३२ पृ. १५६-६०)

प्रो. चंद्रा के इन विचारों का समर्थन प्रो. प्राणनाथ विद्यालंकार भी करते हैं। वे भी सिंधु घाटी में मिली इन कायोत्सर्ग प्रतिमाओं को ऋषभदेव की मानते हैं, उन्होंने तो सील क्रमांक ४४९ पर जिनेश्वर शब्द भी पढ़ा है। (It may also be noted that incription on the Indus seal No. 449 reads according to my decipherment "Jinesh". (Indian Historical Quarterly.) Vol. VIII No. 250.

इसी बात का समर्थन करते हुए डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी लिखते हैं कि "फलक १२ और ११८ आकृति ७ (मार्शल कृत मोहनजोदड़ो) कायोत्सर्ग नामक योगासन में खड़े हुए देवताओं को सूचित करती हैं। यह मुद्रा जैन योगियों की तपश्चर्या में विशेष रूप से मिलती है। जैसे मथुरा संग्रहालय में स्थापित तीर्थंकर ऋषभ देवता की मूर्ति में। ऋषभ का अर्थ है बैल, जो आदिनाथ का लक्षण है। मुहर संख्या F.G.H. फलक पर अंकित देव मूर्ति में एक बैल ही बना है। संभव है यह ऋषभ का ही पूर्व रूप हो।" (हिन्दू सभ्यता पृ. ३९– जैन धर्म और दर्शन)

इसी बात की पुष्टि करते हुए प्रसिद्ध विद्वान राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर लिखते हैं—

"मोहनजोदड़ो की खुदाई में योग के प्रमाण मिले हैं और जैन मार्ग के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव थे जिनके साथ

योग और वैराग्य की परम्परा उसी प्रकार लिपटी हुई हैं जैसे कालांतर में वह शिव के साथ समन्वित हो गयीं। इस दृष्टि से जैन विद्वानों का यह मानना अयुक्ति युक्त नहीं दिखता कि ऋषभदेव वेदोल्लिखित होने पर भी वेद पूर्व हैं।" (संस्कृति के चार अध्याय पृ. ६२)

इसी संदर्भ में प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ. एम. एल. शर्मा लिखते हैं— मुनि श्री विद्यानन्दजी महाराज ने अपने लेख मोहन जोदड़ो : जैन परम्परा और प्रमाण में लिखा है- – भगवान् ऋषभदेव का वर्णन वेदों में नाना सन्दर्भों में मिलता है। कई मन्त्रों में उनका नाम आया है। मोंहन जोदड़ों (सिन्धुघाटी) में पाँच हजार वर्ष पूर्व के जो पुरावशेष मिले है। उनसे भी यही सिद्ध होता है कि उनके द्वारा प्रवर्तित धर्म हजारों साल पुराना है। मिट्टी की जो सीले वहाँ मिली है, उनमें ऋषभनाथ की नग्न योगिमूर्ति है, उन्हें कायोत्सर्ग मुद्रा में उकेरा गया है। "मोहनजोदड़ो से प्राप्त मुहर पर जो चिन्ह अंकित है वह भगवान ऋषभदेव का है। यह चिन्ह इस बात का द्योतक है कि आज से पांच हजार वर्ष पूर्व योग साधना भारत में प्रचलित थी और उसके प्रवर्तक जैन धर्म के आदि तीर्थंकर ऋषभदेव थे। सिंधु निवासी अन्य देवताओं के साथ ऋषभदेव की पूजा करते थे।" (भारत में संस्कृति और धर्म पृ. ६२)

विद्वानों के अनुसार प्राचीनकाल से दो धारायें चल रही है। आर्हत् और बार्हत। पाणिनी ने भी दोनों का उल्लेख करते हुए दोनों में परम्परागत शाश्वत विरोध

बताया है। तार्किक दृष्टि से देखे तो मूलधारा एक होती है जिससे बाद में शाखायें प्रशाखाएं निकलती है। मुख्य धारा आर्हत् संस्कृति थी जो ऋषभदेव से प्रारम्भ हुई और उससे विश्रृंखल हुए लोगों ने अर्थात् जो उसका पालन नहीं कर सके उन्होंने अलग रास्ता अपनाकर विभिन्न धर्मों का प्रारम्भ किया। ऋषभदेव के पौत्र मरिची के शिष्य कपिल से सांख्य धर्म का प्रारम्भ हुआ और सांख्य धर्म ही बाद में वैदिक धर्म की आधार शिला बना। इसीलिये यदि हम किसी भी धर्म या संस्कृति के मूल स्त्रोत में जाये तो वहां हमें ऋषभ संस्कृति के ही दर्शन होगें। Hermann Jacobi का इस विषय में यह उल्लेख महत्वपूर्ण है— "The interest of Jainism to the student of religion consists in the fact that it goes back to a very early period, and to primitive currents of religious and metaphysical speculation, which gave rise also to the oldest Indian Philosophies - Sankhya and Yoga - and to Buddhism."

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल भी इससे सहमत है उनके अनुसार— "यह सुविदित है कि जैन धर्म की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। भगवान् महावीर तो अन्तिम तीर्थंकर थे—भगवान् महावीर से पूर्व २३ तीर्थंकर हो चुके थे उन्हीं में भगवान् ऋषभदेव प्रथम तीर्थंकर थे जिनके कारण उन्हें आदिनाथ कहा जाता है। जैन कला में उनका अंकन घोर तपश्चर्या की मुद्रा में मिलता है। ऋषभनाथ के

चरित्र का उल्लेख श्रीमद् भागवत में भी विस्तार से आता है और यह सोचने को बाध्य होना पड़ता है कि उसका क्या कारण रहा होगा? भागवत में इस बात का भी उल्लेख हैं कि महायोगी भरत, ऋषभ के शत् पुत्रों में ज्येष्ठ थे और उन्हीं से यह देश भारत वर्ष कहलाया।" (जैन साहित्य का इतिहास– प्रस्तावना पृ. ८)

भारतीय दर्शन के पृष्ठ ८८ में श्री बलदेव उपाध्याय लिखते है— "जैन लोग अपने धर्म प्रचारक सिद्धों को तीर्थंकर कहते है जिनमें आद्य तीर्थंकर ऋषभदेव थे। इनकी ऐतिहासिकता के विषय में संशय नहीं किया जा सकता।"

1907 में हेनरी विलियम्स द्वारा सम्पादित 'Historians History of the World' ग्रन्थावली के चौबीस खंड में एक शब्द भी जैन धर्म या आर्हत् संस्कृति के विषय में नहीं मिलता है यहाँ कि भारतीय इतिहास खंड में भी जैन धर्म का कोई उल्लेख नहीं है। लेकिन ऋषभ तथा अन्य तीर्थंकरों का वर्णन वहां भी है। उसी में इतिहासकार हेरेन ने मिस्र और फिनिशिया के विषय में लिखा है। "The Gods Anat and Reschuf seems to have reached the Phoenecians from North Syria at a very early period. So far indeed, it is only certain that they were worshipped by the Phoenecian colonists on Cyprus. Portraits of these deities are displayed on the monuments

of the Egyptians" इस प्रकार के अनेकों संदर्भ तीर्थंकरों से संबन्धित हमें मिले है। सीरिया और बेबीलोन की प्राचीन सभ्यता में भी ऋषभ संस्कृति की झलक मिलती है। Thomas Maurice ने अपनी किताब The History of Hindustan, its Art, and its Science में लिखा है "The Original Sanskrit name of Babylonia is Bahubalaneeya; The realm of king Bahubali" यह सर्वविदित है कि बाहुबली ऋषभदेव के पुत्र थे। और उनकी मान्यता आज भी चली आ रही है।

इसी संदर्भ में वी. जी. नायर लिखते है— "There is authentic evidence to prove that it was the Phoenicians who spread the worship of Rishabha in Central Asia, Egypt and Greece. He was worshipped as 'Bull God' in the features of a nude Yogi. The ancestors of Egyptians originally belonged to India. The Phoenicians had extensive cultural and trade relation with India in the pre-historic days. In foreign countries, Rishabha was called in different names like Reshef, Apollo, Tesheb, Ball, and the Bull God of the Mediterranean people. The Phoenicians worshipped Rishabha regarded as Appollo by the Greeks. Reshef has been identified as Rishabha, the son of

Nabhi and Marudevi, and Nabhi been identified with the Chaldean God Nabu and Maru Devi with Murri or Muru. Rishabhadeva of the Armenians was undoubtedly Rishabha, the First Thirthankara of the Jains. A city in Syria is known as Reshafa. In Soviet Armenia was a town called Teshabani. The Babylonion city of Isbekzur seems to be a corrupt form of Rishabhapur..... A bronze image of Reshef (Rishabha) of the 12th century B.C. was discovered at Alasia near Enkomi in Cyprus. An ancient Greek image of Appollo resembled Tirthankara Rishabha. The images of Rishabha were found at Malatia, Boghaz Koi and also in the monument of Isbukjur as the chief deity of the Hittite pantheon. Excavations in Soviet Armenia at Karmir-Blur near Erivan on the site of the ancient Urartian city of Teshabani have unearthed some images including one bronze statuette of Rishabha" - (Research In Religion.)

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव केवल भारतीय उपास्य देव ही नहीं भारत के बाहर भी उनका प्रभाव देखा जाता है। विश्व की प्राचीनतम संस्कृति श्रमण संस्कृति अर्हतोपासना

में आस्थावान थी तथा यह उतनी ही प्राचीन है जितनी आत्म विद्या और आत्म विद्या क्षत्रिय परम्परा रही है। पुराणों के अनुसार क्षत्रियों के पूर्वज ऋषभदेव हैं। ब्राह्मण पुराण २:१४ में पार्थिव श्रेष्ठ ऋषभदेव को सब क्षत्रियों का पूर्वज कहा गया है। महाभारत के शान्ति पर्व में भी लिखा है कि क्षात्र धर्म भगवान् आदिनाथ से प्रवृत्त हुआ है शेष धर्म उसके बाद प्रचलित हुए है। प्राचीन भारत की युद्ध पद्धति नैतिक बन्धनों से जकड़ी हुई थी। प्राचीन युद्धों में उच्च चरित्र का प्रदर्शन होता था। इतनी उच्च श्रेणी का क्षत्रिय चरित्र का उदाहरण अन्यत्र कहीं नहीं दीखता इसका एक मात्र कारण ऋषभ संस्कृति का प्रभाव है। आर्यों ने यह भारत की प्राचीन श्रमण परम्परा से ही सीखा है।

Dr. Neol Rating जो स्वयं को जैन कहते हैं, उनके अनुसार— "The Jainas claim a great antiquity for their faith. It began, they say, with the lord Rsabha, the first teacher of the path of liberation several thousand years ago. This claim is borne out by both the Yajur Veda and the Rig Veda, scriptures of Brahmanism."

क्रमशः

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar, Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2215-0523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbi eared to tread).

S P M L

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228.
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.
(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

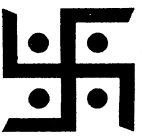

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short
Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

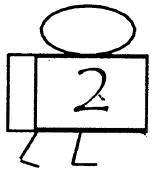

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

B JAIN
JEWELLERS
Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM/Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. No.11 TITTHAYARA February 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
Under R. N. No. 3018/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225